करना चाहिये। स्वक्षेत्र भाव में हो तो पण्डित, लेखनकार्य से द्रव्यलाभ करनेवाला और सुखयुक्त होता है तथा यदि पञ्चमेश द्वादशभाव में हो तो पुत्र सुख से हीन, मूर्ख होता है।

मेष और सिंह से भिन्न राशिस्थ सूर्य यदि पञ्चम स्थान में बैठा हो तो जातक- बाल्यावस्था में दुखी, अल्प सन्तानवाला दंभी और सहायरहीन होता है। चन्द्रमा पञ्चमभाव में हो और सबल हो तो- पतिव्रता स्त्री, पुत्र, धन और समस्त सुख से युक्त किन्तु यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो सुखहीन समझना चाहिये। मङ्गल हो तो सन्तानहीन, पापाचरण और सुख रहित जीवन यापन करनेवाला होता है। बुध हो तो स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त और सौम्य होता है। बृहस्पति हो तो विद्वान्, लेखक, उत्तमवक्ता और सन्तान सुख से युक्त रहता है। शुक्र हो तो कवि, विलासी, धनी और चतुर स्त्री का पति होता है। शनि हो तो कुबुद्धि, सन्तान सुख से हीन और सर्वदा चिन्तित रहनेवाला होता है। राहु या केतु हो तो कुमित्र और कुबुद्धिवाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से हीन, शरीर से पीड़ा युक्त और निकम्मा होता है। यदि चन्द्रमा के साथ राहु बैठा हो तो निश्चयपूर्वक पुत्र सुख से हीन समझना चाहिये।

डॉ० सुदिवट कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)।
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

04
17 06 21

पापग्रह हो किंवा गुरु से पञ्चमभाव में शनि हो तो उस पुरुष को प्रथम स्त्री से पुत्र नहीं होता है दूसरी या तीसरी पत्नी से पुत्र होता है। पञ्चमेश चन्द्रमा के द्रेष्काण में हो अथवा चन्द्रमा से युक्त हो तो केवल कन्या सन्तान कहना चाहिये। पञ्चमेश चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) राशि में, चन्द्रमा राहु से युक्त तथा शनि पञ्चम भाव में बैठा हो तो जातक परजात होता है, एवं यदि लग्न से ८ वें भाव में चन्द्रमा और चन्द्रमा से ८ वें गुरु पापग्रह से युक्त हो तो निश्चय ही जातक परजात होता है।

पञ्चमेश यदि लग्न में हो तो जातक-कुटिल हृदय, दूसरों के धन का लोभी और पुत्रवान् होता है। द्वितीय भाव में हो तो पुत्र और धन से युक्त, यशस्वी तथा परिवार का पालन करनेवाला होता है। तृतीय भाव में हो तो सहोदर सुख से युक्त, कृपण और स्वार्थी होता है। चतुर्थ में हो तो भूमि, माता, पिता आदि के सुख से युक्त, बुद्धिमान, न्यायिक और धन से युक्त रहता है। पञ्चम भाव में हो तो बुद्धिमान्, उदार हृदय वाला और सन्तान सुख को भोगनेवाला होता है। षष्ठभाव में रहे तो पुत्रहीन अर्थात् पुत्र रहते हुए भी पुत्र के सुख से वञ्चित अथवा दत्तक पुत्रवाला समझना चाहिये। सप्तमभाव में हो तो धर्मपरायण, गुणवती स्त्री का पति पुत्रवान कहना चाहिये। अष्टमभाव में हो तो थोड़े पुत्रवाला, कफ-श्वास से पीड़ित और सुख-हीन होता है। नवमभाव में हो तो भाग्यवान्, ग्रन्थकर्ता तथा उस मनुष्य का पुत्र भी राजा के तुल्य होता है। दशम-भाव में हो तो सुखी, विद्वान् और सद्गुणी सन्ततिवाला

P.T.O

03
17 06 21

पञ्चम (पुत्र) भावफल विचार —

लग्नपे सुतभावस्थे सुतपे च सुते स्थिते।
केन्द्रत्रिकोणसंस्थे वा पूर्णं पुत्रसुखं वदेत्॥
सुतेशोऽस्तंगते वापि पापाक्रान्ते च निर्बले।
तदा न जायते पुत्रो जातो वा म्रियते ध्रुवम्॥

लग्नेश पञ्चम (सुत) भाव में हो और पञ्चमेश भी पञ्चम भाव में ही रहे अथवा ये दोनों केन्द्रत्रिकोण में हों तो जातक पुत्र सुख से पूर्ण सुखी होता है, एवं यदि पञ्चमेश अस्त हो या पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्र नहीं होता, कदाचित् पुत्र हो भी तो मर जाता है।

विशेष — पञ्चमेश यदि षष्ठभाव में हो या मङ्गल से युक्त हो तो उसकी प्रथम सन्तान होकर नष्ट हो जाती है या फिर सन्तान नहीं होता है। पञ्चमेश नीच में होकर ६, ८ या १२ वें भाव में हो अथवा पञ्चम स्थान में केतु और बुध हो, किंवा पञ्चमेश नीच का हो और अपने भाव को नहीं देखे और उसमें (पञ्चमभाव में) शनि, बुध हो तो उस मनुष्य की स्त्री वन्ध्या होती है। पञ्चमेश नीच में हो, पञ्चमभाव में बुध, केतु भी रहे परन्तु यदि लग्नेश लग्न में बैठा हो तो धर्मानुष्ठानादि यत्न से पुत्र होता है। पञ्चमेश अपने उच्च में होकर २, ३, १, ५, ९ वें में हो तथा गुरु से युक्त वा दृष्ट भी हो तो वह मनुष्य निश्चय ही पुत्र के सुख से पूर्ण सुखी होता है। पञ्चमभाव में पापग्रह, गुरु से पञ्चमभाव में शनि, द्विर्भाव में लग्नेश और पापग्रह से युक्त पञ्चमेश हो तो ऐसे योग में उस मनुष्य को पुत्र होकर भी मर जाते हैं एवं यदि पञ्चम भाव

P.T.O

चन्द्र या पापग्रह से युक्त लग्न का नवमांश दिनार्ध और रात्र्यर्ध में घटी का तीसरा भाग (२० पल) अर्थात १० पल पूर्व, १० पल पश्चात, पापग्रहों का नवांश, ग्रहण से पूर्व के ३ दिन, उत्पात के बाद ६ दिन, शुभफलदायक उत्पात में उसी दिन तथा ग्रहों से भिन्न (भेदित) नक्षत्र, यौद्ध (जिसमें ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह) नक्षत्र और उत्पात का नक्षत्र ये ६ मास तक वर्जित है।

ग्रासभेद से ग्रहण-नक्षत्रों का त्याज्य काल—

नेष्टं ग्रस्तर्क्षं सकलार्धपादग्रासे क्रमात्तर्कयुगेन्दुमासान्।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा ग्रास्तेऽस्तगे वाऽभ्युदितेऽर्धखण्डे॥

सूर्य या चन्द्र का ग्रहण— सम्पूर्ण में ६ मास आधे में ३ मास और चतुर्थांश में १ मास तक ग्रहण का नक्षत्र त्याज्य है। यदि ग्रहण लगे हुए अस्त हो तो ३ दिन पूर्व और ग्रहण लगे हुए उदय हो तो ३ दिन पश्चात तथा अर्धग्रस्त उदित वा अस्त (खण्डग्रास) हो तो ३ दिन पूर्व, ३ दिन बाद भी नेष्ट कहे गये हैं।

डॉ० सुदिवर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

पक्षरन्ध्र-तिथि —

वेदाङ्कावष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत् ।
वेस्वङ्कमनुतत्त्वाशाः शरा नाडीः पराः शुभाः ॥

दोनों-पक्ष (कृष्ण और शुक्ल) की 4, 6, 8, 9, 12, 14 इनकी क्रम से आदि की 8, 9, 14, 25, 10, 5 घटी शुभकार्य में वर्जित है, बाँकी तिथियाँ शुभ है।

दग्ध-नक्षत्र —

याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यमणं ज्येष्ठान्त्यं रवेर्दग्धभं स्यात् ॥

रविवारादि प्रत्येक वारों में क्रम से भरणी, चित्रा उ० षा०, धनिष्ठा, उ० फा०, ज्येष्ठा और रेवती ये दग्ध नक्षत्र है

पञ्चाङ्गदूषण —

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपात भद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी ।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपात-विष्कुम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ॥

जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति योग, अमावस्या, माता-पिता का श्राद्धदिन, तिथिक्षय-वृद्धि, क्षय-अधिमास, कुलिक, अर्द्धयाम तथा पात ये वर्जित हैं। एवं विष्कम्भ, वज्रयोग के आदि की केवल 3 घटी ही वर्जित है।

शुभकार्यों में वर्ज्यपदार्थ —

सर्वेस्मिन्विधुपापयुक्तनववर्षे निशा ह्रोर्ध्वटीत्र्यंशं
वै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम् ।
उत्पातग्रहगोडव्ययहांश्च शुभदोत्पातैश्च दुष्टं दिनंषण्मासं
ग्रहभिन्नं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ॥

P.T.O